1.2 नीतिशास्त्र का अर्थ, स्वरूप, विकास एवं परिभाषा –

नीतिशास्त्र के स्वरुप व कार्यक्षेत्र के विवेचन से पूर्व हमें सर्वप्रथम यह समझना आवश्यक है कि नीतिशास्त्र की उत्पत्ति क्यों हुई ! अथवा समाजिक पटल पर नैतिक परिचर्चा की क्या आवश्यकता थी? वस्तुतः एक ओर तो मानव सहज ही जिज्ञासु एवं बौद्धिक प्राणी है तो दूसरी ओर प्रकृतया सामाजिक प्राणी। अतः जहां 'दर्शन' की उत्पत्ति मानवसुलभ जिज्ञासा के कारण मानवोत्पत्ति के साथ ही हुई, वही 'नैतिकता' के तत्व मानवों में तब उद्भूत हुए जब मानव एक दूसरे के संपर्क में आया, एवं अपने दुष्कर प्राकृतिक एवं कठिन सामाजिक जीवन को सहज बनाने हेतु पारस्परिक समझ व सहयोग से कुछ नियम व मानदंड निर्मित किये, जो निरंतर व्यावहारिक जीवन में प्रयुक्त होने के कारण शनैः–शनैः रीति–रिवाजों व परम्पराओं का रूप ग्रहण करते चले गये। यही सामाजिक 'नियम' या 'मानदण्ड' कालांतर में रुढ़िगत होकर *सामाजिक नैतिकता के मानदंडों* के रूप में परिणत हुए, जिसे परंपरागत अर्थ में 'नैतिक अध्ययन' (moral studies) कहा गया। तदन्तर दार्शनिकों नें इन रुढ़िगत, पारंपरिक मूल्यों एवं मानकों का तार्किक विश्लेषण करने के साथ–साथ उसके औचित्यीकरण या यौक्तिकता की बौद्धिक विवेचना आरंभ की जिससे कालांतर में 'नीतिशास्त्र' (Ethics) या 'नीतिदर्शन' (Moral Philosophy) का विकास हुआ।

वर्तमान में, नीतिशास्त्र अपने विकसित एवं परिष्कृत रूप में मात्र परम्पराओं व रुढ़ियों के अध्ययन तक सीमित न रह कर प्रखर बौद्धिक समीक्षा का विषय के रूप में परिणत होकर नैतिक मूल्यों के अध्ययनकर्ता एवं मानव के व्यावहारिक जीवन का मार्गदर्शन करने हेतु नियामक विषय के रूप में प्रस्तुत हुआ। इसने पारंपरिक रीतिरिवाजों, रुढ़ियों, कानून, धर्म, नैतिकता, सामाजिक व्यवहार के नियमों इत्यादि को अपने अध्ययन परिधि में समाहित करते हुए भी स्वतः को पृथक अस्तित्व प्रदान किया है। अन्य शब्दों में, नीतिशास्त्र मूल्यों या उत्कर्षों के समीक्षात्मक अध्ययन के रूप में

Scanned by TapScanner

स्थापित हुआ, जहाँ यह कालांतर में वैयक्तिक मानवीय अभिप्रायों, निर्णयों व कर्मों के साथ–साथ समुदायिक निर्णयों व कर्मों के मूल्यों की समीक्षा भी करने लगा। इस प्रकार कहा जा सकता है कि नीतिशास्त्र या नैतिक दर्शन 'नैतिक विषयों'पर 'दार्शनिक चिंतन' या 'नैतिक विषयों की दार्शनिक समीक्षा है।'

1.3 नीतिशास्त्र के कार्यक्षेत्र एवं प्रकार–

नीतिशास्त्र के अंतर्गत सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि नीतिशास्त्र व्यक्ति, समूह, संस्थानों के निर्णयों एवं कर्मों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन किस प्रकार करेगा? इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु नीतिशास्त्रियों ने कुछ *सार्वभौमिक मानकीय नैतिक मानदण्डों* की स्थापना की, जिससे मानव के व्यावहारिक जीवन का मार्गदर्शन किया जा सके। नीतिशास्त्र की इस विधा को *'मानकीय नीतिशास्त्र' (Normative Ethics)* की संज्ञा से अभिहित किया गया। किन्तु इन नियामक नैतिक मानदंडों द्वारा मानव के व्यावहारिक जीवन के मार्गदर्शन या नियमन का कार्य तभी सम्पादित किया जाना संभव था, जब इन नैतिक नियमों की स्थापना प्रबल *बौद्धिक तर्कों* पर आधृत हो, जिससे इन्हें सार्वभौमिक सिद्धान्तों के रूप स्वीकृत किया जा सके। पुनःश्च इन नियामक नैतिक सिद्धान्तों एवं मानदण्डों पर आधृत नैतिक निर्णयों का व्यावहारिक प्रयोग तभी संभव है जब इन नियामक नैतिक पदों व मानदण्डों का अर्थ स्पष्ट हो। इस हेतु नीतिशास्त्र की एक अन्य शाखा *'अधिनीतिशास्त्र' (Meta–Ethics)* सृजन हुआ, जिसके अंतर्गत नैतिक भाषा के अर्थ के स्पष्टीकरण एवं मानकों के औचित्यीकरण की विवेचना की जाती है। इस प्रकार जहां *मानकीय नीतिशास्त्र* मानवीय निर्णयों एवं आचरणों के नैतिक मूल्यांकन को आधार प्रदान करता है वहीं *अधिनीतिशास्त्र* नैतिक भाषा के अर्थ के स्पष्टीकरण के साथ–साथ मानकीय सिद्धांतों की स्थापना हेतु प्रदत्त युक्तियों की व्याख्या एवं परीक्षण करता है। *अर्थात् यह नैतिक मानदण्डों के औचित्यीकरण एवं भाषा–विश्लेषण* का कार्य करता है। नीतिशास्त्र के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए हमने वस्तुतः इसके उपरोक्त दो मौलिक कार्यों की व्याख्या अब तक की है। किन्तु नीतिशास्त्र के अन्य कार्य भी हैं जिसका विवेचन हम इसी अध्याय में आगे किया है।

Scanned by TapScanner